3

मुख्य बात

(1:16, 17)

हम रोमियों के नाम पत्र के परिचय के अन्तिम भाग में आ गए हैं। उस समय के पत्राचार के नमूने का पालन करते हुए पत्र का आरम्भ (1) लेखक के नाम (1:1क), (2) प्राप्तकर्त्ताओं के पदनाम (आयत 7क), (3) अभिवादन (आयत 7ख) और (4) धन्यवाद जताने (आयत 8) से हुआ। अपने पत्र का मुख्य भाग आरम्भ करने से पहले पौलुस को एक और बात करनी थी। यानी उसे विषयवाक्य लिखना था। हमारा पिछला पाठ 1:15 के साथ खत्म हुआ था: ''सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।'' ''सुसमाचार'' शब्द को उठाते हुए पौलुस ने कहा:

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (आयतें 16, 17)।

रोमियों 1:16, 17 इतनी विस्तृत हैं कि हमें इन दो आयतों को समझने के लिए पूरा पाठ देना पड़ेगा। वे पत्र के आरम्भ और मुख्य बात के बीच पुल का काम करती हैं। आरम्भ के बारे में यूनानी उप-पद (*gar*) जिसका अनुवाद ''इसलिए'' हुआ है आयत 16 को पिछली आयतों से जोड़ता है। पौलुस ने अपने पाठकों को बताया था कि वह रोम में जाना चाहता था! अब उसने विस्तार से बताया कि यह *क्यों* आवश्यक था कि वहां सुसमाचार सुनाया जाए। पत्र के मुख्य भाग के रूप में ये आयतें उस सब के लिए भी मंच तैयार करती हैं, जो पौलुस कहने को था। अगले साढ़े पन्द्रह अध्यायों में हम देखेंगे कि उसने 1:16, 17 में बताए गए विषयों को कैसे विस्तार दिया।

इन आयतों में कई महत्वपूर्ण शब्द हैं, पर ''सुसमाचार,'' ''विश्वास'' और ''धार्मिकता'' तीनों शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण कोई नहीं है। पहले मैंने कहा था कि हम शब्द अध्ययन को तब तक के लिए टाल देंगे, जब तक वचन पाठ में वे शब्द नहीं आते। अब इन तीनों शब्दों को बारीकी से देखने का समय है। मैं ऐसा कुछ नहीं कहूंगा, जो इन शब्दों के बारे में कहा जा सकता है, पर आपके मनों को अगले अध्यायों में प्रेरित द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों के लिए तैयार करने के लिए अवश्य कहना चाहूंगा।

अत्यावश्यक उपचार: सुसमाचार (1:16, 17)

वचन पाठ की समीक्षा करना

14, 15, 16 आयतें तीन ''मैं हूं'' वाक्य देती हैं। आयत 14 में पौलुस ने कहा, ''मैं कर्ज़दार हूं।'' आयत 15 में उसने कहा, ''मैं भरसक तैयार हूं।'' और अब आयत 16 में उसने कहा, ''मैं नहीं लजाता'' हूं: ''मैं सुसमाचार से नहीं लजाता'' (आयत 16क)। अनुवादित शब्द ''लजाता'' (*epaischunomai*) का अर्थ है ''की गई किसी बात से शर्म महसूस करना।''[1]

पौलुस का दावा है कि वह ''सुसमाचार से नहीं लजाता था'' हमें अजीब लग सकता है। हम हैरान हो सकते हैं कि क्रूस पर मसीह की कहानी से शर्माने वाला कैसे हो सकता है। तौभी कई लोग उस समय सुसमाचार से लजाते थे और कई आज भी लजाते हैं। रोमियों 1:16 के पहले भाग पर अच्छा टीका 1 कुरिन्थियों 1:23 है जहां पौलुस ने कहा, ''हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिए ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिए मूर्खता है।'' यह तथ्य कि संसार क्रूस को मूर्खता मानता था, एक पुरानी पेंटिंग की तस्वीर से पता चलता है। यह क्रूस पर लटके हुए यीशु की तस्वीर को दिखाता है पर क्रूस पर मनुष्य के सिर के बजाय गधे के सिर की तस्वीर है। उसके नीचे यह शब्द लिखे हुए थे: ''फेलिक्स नाम यहूदी अपने देवता की पूजा करता है।''[2]

ऐसे मजाक से कई मसीही लोगों ने फांसी लगा ली हो सकती है पर पौलुस ने नहीं। उसने दृढ़तापूर्वक दूर-दूर तक क्रूस की कहानी का प्रचार किया, क्यों? ''क्योंकि सुसमाचार उद्धार के निमित्त *परमेश्वर की सामर्थ* है'' (रोमियों 1:16ख)। अनुवादित शब्द ''सामर्थ'' का यूनानी शब्द (*dunamis*) वही शब्द है जिससे अंग्रेज़ी का ''dynamo,'' ''dynamic,'' और ''dynamite'' शब्द मिला है।

> एक शब्द जो रोमी सरकार को संक्षिप्त में बता देगा, वह सामर्थ है। शक्तिशाली रोमी साम्राज्य हमेशा के लिए आगे बढ़ना चाहता था और इसकी सेनाएं अजय लगती थीं। रोम में रहने वाले लोगों को निरन्तर रोम की सामर्थ याद रहती थी, जिसमें अपनी विजयों का जश्न मनाने के लिए सेनापति बाज़ारों में परेड करते थे, पराजित देशों के हज़ारों संख्या में पुरुष और स्त्रियां गुलामों का काम करने के लिए लाए जाते थे और इस परिदृश्य में पौलुस परमेश्वर की सम्प्रभुता का संदेश देता है।[3]

रोमियों को उस शक्ति पर जो उनके पास थी, अपने आप में गर्व हो सकता है, पर उनके पास उनके साम्राज्य को नष्ट करने वाली नैतिक सड़न को रोकने की शक्ति नहीं थी। उनके पास अपने परिवार के लिए परेशानी पैदा करने वाले व्यक्ति को लेकर उसे प्रेमी पति और पिता में बदलने की शक्ति नहीं थी।[4] यह शक्ति केवल परमेश्वर के पास है।

सुसमाचार ''उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ'' थी। अनुवादित शब्द ''उद्धार'' (*soteria*) का अर्थ मुख्यतया ''छुटकारा'' है। इसका इस्तेमाल सैनिक विजय या चिकित्सकीय चंगाई के लिए किया जाता था। पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए जाने पर इसका अर्थ पाप के दोष, व्यवहार, शक्ति और अनन्त परिणामों से छुटकारा था।

मूल धर्म शास्त्र में ''सामर्थ'' शब्द से पहले निश्चित उपपद (the) नहीं मिलता।[5] इस आयत

का अनुवाद ''यह उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है'' हो सकता है। परमेश्वर के पास अपनी सामर्थ दिखाने के और ढंग हैं: जीवन को बहाल करने के लिए उसकी सामर्थ (*dunamis*) यीशु के जी उठने में दिखाई दी (आयत 4), जब कि उसकी सृजनात्मक सामर्थ (*dunamis*) उस सब में दिखाई देती है, जो उसने बनाया (आयत 20)। परन्तु उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर की सामर्थ सुसमाचार है यानी पवित्र आत्मा के द्वारा कोई काल्पनिक धक्का मारना नहीं, बल्कि सुसमाचार है।

परमेश्वर ने चाहा कि उसकी सामर्थ ''हर एक विश्वास करने वाले के लिए'' उपलब्ध हो (आयत 16ग)। सुसमाचार सबके लिए है (देखें मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 1:8)। पौलुस ने ''पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए भी'' शब्दों में इसकी विश्वव्यापकता पर ज़ोर दिया (रोमियों 1:16घ)। यहां ''यूनानी'' का अर्थ यूनानी भाषा बोलने वाले अन्यजाति संसार के लिए है। यहूदियों के साथ अन्यजाति सब बराबर कर दिए गए।

''*पहले* तो यहूदी फिर यूनानी के लिए *भी*'' में पौलुस ने जो कहा उसके कारण पर मुझे कुछ कहना चाहिए। उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर यहूदियों को अन्यजातियों से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण मानता था। अध्याय 2 में उसने दो बार इसी मूल शब्दावली का इस्तेमाल किया (आयतें 9, 10) और फिर तुरन्त ज़ोर देकर कहा कि ''परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता'' (आयत 11)। 10:12क में उसने कहा कि ''यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु है।''

पौलुस की बात से कई ऐतिहासिक तथ्यों का पता चला। यहूदी लोग विशेष जाति थे, जिनके द्वारा परमेश्वर ने मसीहा को संसार में लाने का काम किया। ख्रिस्तुस (अर्थात मसीह) एक यहूदी था और वह फलस्तीन के यहूदी इलाके में रहा और वहीं मरा। परमेश्वर और यहूदियों के बीच सदियों पुराने सम्बन्ध के कारण यहूदियों को मसीहा और उसके राज्य को स्वीकार करने या नकारने का पहला अवसर दिया गया था। उसका राज्य (कलीसिया) यहूदी संसार की राजधानी यरूशलेम में स्थापित हुआ और पहला सुसमाचार संदेश यहूदियों को ही सुनाया गया था। सुसमाचार के फलस्तीन से अन्यजतियों तक फैलने पर भी, सुसमाचार आमतौर पर कहीं पर भी पहले यहूदियों को और फिर अन्यजतियों को सुनाया जाता था। पिसिदिया के अन्ताकिया में पौलुस ने यहूदियों को बताया कि ''अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता: परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं'' (प्रेरितों 13:46)।

''पहले तो यहूदी और फिर यूनानी के लिए भी'' शब्दों में हमें रोम की कलीसिया के इन दो तत्वों में सम्बन्ध सुधारने की पौलुस की इच्छा का एक और संकेत मिल सकता है। कॉय रोपर ने टिप्पणी की है, '' 'पहले तो यहूदियों': पौलुस अन्यजातियों को यह बताना चाहता है कि परमेश्वर की योजना में विशेष भूमिका यहूदियों की है। 'फिर यूनानियों के लिए': पौलुस यहूदियों को बताना चाहता है कि परमेश्वर यूनानियों, अन्यजातियों को मनुष्य के उद्धार की अपनी योजना में शामिल करता है।''[6]

फिर से मैं यह ज़ोर देता हूं कि ये दोनों शब्द संसार के हर व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। सुसमाचार सब के लिए है। उद्धार के लिए मनुष्यजाति की एकमात्र आशा यही है।

शब्द की व्याख्या करना

रोमियों 1:1 पर अपनी टिप्पणियों में मैंने ''सुसमाचार'' शब्द पर कुछ व्याख्याएं दी हैं, परन्तु अब हमें अपनी समझ को बढ़ाना चाहिए। पौलुस के लिए यह शब्द विशेष था। नये नियम में निन्यानवे में से सत्तर बार पौलुस ने इसका इस्तेमाल किया।

जैसा कि पहले कहा गया है, अनुवादित शब्द ''सुसमाचार'' (*euangelion*) ''भलाई'' (*eu*) के साथ ''समाचार'' या ''संदेश'' (*angelion*) के लिए शब्द के पूर्वसर्ग को मिलाने वाला मिश्रित यूनानी शब्द है। इसका मूल अर्थ ''शुभ समाचार'' है। (कई लोग ''अच्छी बातें'' वाक्यांश को प्राथमिकता देते हैं।) सुसमाचार के लिए अंग्रेजी शब्द ''gospel'' का अर्थ (''good-spell'') वाला ही है।

वर्षों से *euangelion* शब्द का इस्तेमाल कई तरह से किया जाता था,[7] पर पौलुस के समय में इसका सामान्य अर्थ ''शुभ समाचार'' था। किसी भी अच्छे समाचार के लिए आम बोलचाल में इसका इस्तेमाल किया जाता था, पर नये नियम में इसका इस्तेमाल विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से मिले शुभ समाचार के लिए किया गया है। सुसमाचार के वृत्तांतों में मसीहा के आने को ''सुसमाचार'' या ''शुभ समाचार'' कहा जाता था (मरकुस 1:1)। यीशु और अन्यों ने ''राज्यों के सुसाचार'' का प्रचार किया (मत्ती 4:23; 9:35)। यानी इस शुभ समाचार कि मसीहा अपना राज्य (कलीसिया) स्थापित करने वाला है। लोगों को ''शुभ समाचार'' बताया गया कि उनकी समस्याओं के सुलझने की उम्मीद है (देखें लूका 4:18)।

पत्रियों में ''सुसमाचार'' यह शुभ समाचार है कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा। रॉबर्ट माउंस ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है: सुसमाचार ''पाप की दासता में पड़े मनुष्य की ओर से मसीह यीशु में छुटकारे के काम का परमेश्वर की आनन्द'' है।[8] इस ''शुभ समाचार'' पर के दो पहलू हैं। एक तो मसीह के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने के सांसारिक तथ्यों को दिखाता ''ऐतिहासिक पहलू है।''

> हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं ... मैं ने सब से पहिले तम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

यदि हम वह प्रचार करते हैं, जिससे लोगों को उद्धार पाने की आवश्यकता है, परन्तु यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने को नज़रअन्दाज करते हैं, तो हमने सुसमाचार नहीं सुनाया।

सुसमाचार का ''डॉक्ट्रिनल पहलू'' भी है। कइयों का मत है कि सुसमाचार (2 थिस्सलुनीकियों 1:8; 1 पतरस 4:17; देखें रोमियों 10:16; KJV)। इस बात का संकेत है कि सुसमाचार में आज्ञाएं भी हैं।

सुसमाचार का डॉक्ट्रिनल पहलू शुभ समाचार के आत्मिक महत्व में केन्द्रित है। सुसमाचार हमें बताता है कि जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, हम उससे कैसे लाभ उठा सकते हैं। यह उस प्रभाव पर भी ज़ोर देता है, जो हमारे जीवनों पर इसका होना चाहिए (देखें फिलिप्पियों 1:27)। पहले एक पाठ में मैंने डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को को उद्धृत किया था, जिसने लिखा है कि

''[पौलुस] जहां भी गया उसने वह सच्चाई बताई, जिससे लोगों को सहमत होना चाहिए, वे प्रतिज्ञाएं बताई जिन पर उन्हें भरोसा करना चाहिए और वे आज्ञाएं बताईं, जो उन्हें माननी चाहिए।''[9] ब्रिस्को की टिप्पणी पढ़ते हुए मुझे ध्यान आया कि किस प्रकार आरम्भिक प्रचारक सुसमाचार को संक्षेप में बताते थे। वे सुझाव देते थे कि इसमें निम्न बातें हैं:

तथ्य जो मानने आवश्यक हैं: विशेषकर यीशु की मत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना (देखें 1 कुरिन्थियों 15:1-4)।

आज्ञाएं जो मानी जानी आवश्यक हैं: विश्वास, मन फिराव और बपतिस्मे सहित (रोमियों 6:3-6, 17, 18)।

प्रतिज्ञाएं जिनका आन्नद लेना है: इनमें पापों की क्षमा, पवित्र आत्मा का दान और स्वर्ग की प्रतिज्ञा है (देखें प्रेरितों 2:38; कुलुस्सियों 1:23; तीतुस 1:2)।

विचार को विस्तार देना

रोम शक्ति का दीवाना था और आज का संसार भी ऐसा ही है। हम मज़बूत होना, तेज़ जाना और बड़ा बनाना चाहते हैं पर दो हज़ार सालों के बाद भी ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो सुसमाचार के बराबर हो। क्रूस की कहानी आज भी ''परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है'' (1 कुरिन्थियों 1:24; देखें आयत 23)। जेम्स मीडोज़ ने इसे ''पाप, परम्परा, मूर्तिपूजा और मनुष्यों के मनों से असहायपन को उड़ाने के लिए परमेश्वर का डायनामाइट'' कहा।[10]

सुसमाचार उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ ही नहीं यह परमेश्वर की प्रेरणादायक सामर्थ भी है। यीशु ने कहा, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से [क्रूस पर] ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूगा'' (यूहन्ना 12:32; देखें आयत 33)। इसके अलावा सुसमाचार परमेश्वर की बदलने वाली सामर्थ है। पुरुषों और स्त्रियों द्वारा परमेश्वर की प्रेम की कहानी को स्वीकार कर लेने से लाखों करोड़ों जीवन बदल गए हैं (देखें 2 कुरिन्थियों 5:17)। एक आदमी की कहानी है जिसका जीवन इतना बदल गया था कि उसके एक कर्मचारी ने टिप्पणी की, ''यह वही आदमी नहीं है! उसका चेहरा तो वही है पर अन्दर से वह नया आदमी है!''[11]

सुसामाचर इतना महत्वपूर्ण है कि हम इसे ''नज़रअन्दाज, अनदेखा, बदलने, बिगाड़ने, ... इसे सुनने से इनकार'' नहीं कर सकते। हम में से वे जो मसीही हैं ''इसे सुनाने में असफल होने का साहस नहीं कर सकते।''[12] यह आज भी उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है जो उसकी एकमात्र सामर्थ है। आज कई लोग ''कलीसिया में लोगों को आकर्षित करने के लिए'' नये-नये ढंग खोज रहे हैं। कॉय रोपर ने टिप्पणी की है, ''कलीसिया में लोगों को चाहे जो भी आकर्षित करता है, पर तब तक किसी का उद्धार नहीं होगा जब तक हम सुसमाचार नहीं सुनाते और वे इसे मानते नहीं।''[13] सुसमाचार आज भी पाप के बीमार संसार के लिए परमेश्वर का इलाज है। यदि हम इसे उन सब लोगों को नहीं बताते, जिन्हें हम जातने हैं, तो वे खोए हुए होंगे!

क्या यह हो सकता है कि जैसे पौलुस के विपरीत जो सुसमाचार से नहीं लजाता था, हम लजाएं? हम में से अधिकतर लोग इससे लजाने की बात कभी नहीं मानेंगे पर क्या हम यीशु में अपने विश्वास को अपने मित्रों को बताने से हिचकिचाते हैं? क्या हम उन्हें सिखाने की कोशिश

करने से इसलिए डरते हैं कि कहीं हम उन्हें खो न दें? CEV में रोमियों 1:16 को इस प्रकार बताया गया है: ''मैं शुभ समाचार पर गर्व करता हूं!'' परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम शुभ समाचार पर हमेशा गर्व करें और इसके अनुसार काम करें!

अत्यावश्यक: विश्वास (1:16ख, 17)

आयत 16 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि सुसमाचार ''हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' आयत 17 में विश्वास के महत्व पर भी ज़ोर दिया गया है ''क्योंकि [सुसमाचार] में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।'' आयत 17 में विस्तार से चर्चा करने से पहले आइए ''विश्वास'' शब्द को और बारीकी से देख लेते हैं। रोमियों में पौलुस ने ''विश्वास'' शब्द का इस्तेमाल लगभग 60 बार किया।[14] हमें इस शब्द के अर्थ को समझने की आवश्यकता है।

शब्द की व्याख्या करना

विश्वास के लिए अनुवादित अंग्रेज़ी शब्द ''believes'' *pisteuo* से लिया गया है। इसका एक और शब्द ''फेथ'' *pistis* से अनुवाद किया गया है। दोनों शब्दों के बीच का सम्बन्ध और स्पष्ट हो सकता है यदि अंग्रेज़ी बाइबल में ''फेथ'' की जगह ''belief'' होता। कई बार ''belief'' और ''faith'' दोनों का अनुवाद ''*pistis*'' से हुआ है। अनुवादकों को ही इसका कारण पता होगा कि उन्होंने *pistis* का अनुवाद करने के लिए ''faith'' और उसी शब्द के नकारात्मक रूप (*apistia*) का अनुवाद करने के लिए ''unbelief'' शब्द का इस्तेमाल क्यों किया (देखें रोमियों 3:3; 4:20; 11:20, 23)।

Pistis और *pisteuo* दोनों का सम्बन्ध *peitho* से है, जिसका अर्थ मनाना है।[15] दोनों के मूल अर्थ का सम्बन्ध पूरी तरह से मनाने या विश्वास दिलाने से है। विश्वास या मानने की चीज़ शब्दों में नहीं, बल्कि संदर्भ से मिलनी चाहिए। इसलिए अंग्रेज़ी शब्द ''faith'' का अर्थ ''मज़बूती से किसी विचार को पकड़ना'' हो सकता है। जैसा कि हम देखें कि रोमियों 14:2, 22, 23 में सम्भवतया इसी अर्थ में इसका इस्तेमाल हुआ है। बेशक आमतौर पर पौलुस और नये नियम के अन्य लेखकों ने ''परमेश्वर या मसीह या आत्मिक बातों में विश्वास'' के लिए इसका इस्तेमाल किया है।[16] रोमियों में पौलुस ने ज़ोर दिया कि उद्धार की आवश्यक शर्त यही विश्वास है।

बचाने वाले विश्वास में दिल, दिमाग और इच्छा होती है।[17] पहले तो इसमें दिमाग होता है क्योंकि यह गवाही के द्वारा पाए ज्ञान पर आधारित है। रोमियों 10 में पौलुस ने ''विश्वास के वचन'' की बात की, जिसका वह प्रचार कर रहा था (आयत 8), और फिर कहा, ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से आता है'' (आयत 17)। उद्धार दिलाने वाला विश्वास यीशु के बारे में सीखने से आता है।

दूसरा, विश्वास में दिल शामिल होता है क्योंकि विश्वास करने वाला जो सुनता है, उसे मानता है और उस पर निर्भर रहने को तैयार है। डब्ल्यू ई. वाइन ने लिखा है कि नये नियम में, ''विश्वास करना'' का अर्थ ''में यकीन करना, भरोसा करना, [औरों के ऊपर भरोसा करने का संकेत]

है।''[18] 1:16 में AB में कहा गया है कि सुसमाचार ''हर कोई जो निजी भरोसे के साथ और यकीन के साथ विश्वास करते हुए समर्पण और पक्का भरोसा करता है।'' जब हम सचमुच में यीशु पर विश्वास करते हैं तो हम उसके बजाय जो हमने किया है उस पर भरोसा रखते हैं, जो उसने किया है। अपने ऊपर भरोसा रखने के बजाय हम उस में भरोसा रखते हैं।

अन्त में उद्धार दिलाने वाले विश्वास में इच्छा शामिल होती है। अपने बजाय यीशु पर भरोसा रखने का आवश्यक पहलू अपनी इच्छा के बजाय उसकी इच्छा के आगे अपने आपको सौंप देना है। पौलुस की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो विश्वास ''परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन होना'' (10:3) है। केवल इतना ही देखें कि उद्धार दिलाने वाले विश्वास में मन से आज्ञापालन आवश्यक है (देखें 6:17)। वास्तव में जब तक विश्वास करने वाला आज्ञा मानने को तैयार नहीं है, उसके विश्वास को उद्धार दिलाने वाला विश्वास नहीं कहा जा सकता। रोमियों में चाहे पौलुस का ज़ोर विश्वास पर है पर उसने आज्ञापालन की बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया (देखें 1:5; 2:8; 5:9; 6:16, 17; 15:18; 16:19, 26)।

थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट में रुडोल्फ बल्टमैन ने लिखा है कि *pisteuo* का एक अर्थ है ''आज्ञा मानना। इब्रानियों 11 ज़ोर देता है कि विश्वास करना आज्ञा पालन करना है, जैसा [पुराने नियम] में है। पौलुस ने भी दिखाया कि विश्वास करने का अर्थ आज्ञा मानना है।'' बर्टमैन ने यह भी लिखा कि *pistis* में ''विश्वास करना, आज्ञा मानना, भरोसा करना, आशा करना और वफ़दार होना शामिल है'' और जोड़ा कि विश्वास ''क्रूस पर अनुग्रह और न्याय दोनों के ईश्वरीय कार्य की स्वीकृति के रूप में आज्ञा मानना है।''[19]

''विश्वास'' और ''आज्ञा मानना'' शब्दों का निकट सम्बन्ध इस तथ्य में देखा जा सकता है कि कई बार इन शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे की जगह किया जाता है। कई घटनाएं बताई जा सकती हैं (देखें यूहन्ना 3:36; तुलना करें इब्रानियों 3:19 और 4:6), पर रोमियों से दो उदाहरणों पर ध्यान देते हैं। 1:8 में पौलुस ने कहा कि रोम के मसीही लोगों का विश्वास संसार भर में प्रसिद्ध था, जबकि 16:19 में उसने कहा कि यह उनका आज्ञा पालन था, जो प्रसिद्ध था। 10:16 में उसने कहा कि सब लोगों ने सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी। (NASB में *hupakouo* से अनुवादित ''heed'' जिसका अर्थ है ''आज्ञा मानना'' है [देखें KJV].) उसने संकेत दिया कि यह यशायाह की बात का पूरा होना था कि बहुत से लोग समाचार पर विश्वास नहीं करेंगे।

फिर मैं कहता हूं कि उद्धार दिलाने वाले विश्वास में दिल दिमाग और इच्छा तीनों का होना आवश्यक है। किसी भी धर्मशास्त्र में ज़ोर तीनों में से एक या अधिक तत्वों पर दिया जाएगा। संदर्भ ही तय करता है कि विश्वास के किस पहलू या पहलुओं की उस विशेष आयत में बात हो रही है।[20]

उद्धार दिलाने वाले तीनों तत्वों की रूपरेखा देने के बाद मैं जल्दी से दो और विचारों को जोड़ देता हूं। पहला तो यह कि चाहे अलग-अलग ज़ोर देने के साथ ''विश्वास'' शब्द का इस्तेमाल अलग- अलग बाइबलों में हो, पर यह पहला, अन्तिम और हमेशा *विश्वास* है। यह ध्यान देने के बाद कि *pistis* में ''विश्वास करना, आज्ञापालन, भरोसा करना, आशा रखना और वफ़ादार होना'' है। बल्टमन ने निष्कर्ष निकाला, ''पर मुख्यतया यह मसीह में विश्वास है।''[21]

अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज में रोमियों की मेरी क्लास में भाई जे. डी. थॉमस ने बोर्ड पर उदाहरण देते हुए इस बात पर ज़ोर दिया। उन्होंने बोर्ड पर एक रेखा खींचते हुए आरम्भ किया।

फिर उन्होंने एक दम से उस रेखा की दिशा बदल दी। उन्होंने रेखा में मोड़ का निशान लगाया। ''हम इसे मन परिवर्तन अर्थात उद्धार को दर्शाने देंगे,'' उन्होंने कहा। उन्होंने उस जगह FAITH चिपका दिया। वह आगे बताते रहे कि यदि आपको यह जांचना हो कि मैगनिफाइंग ग्लास के नीचे विश्वास क्या है तो आपको ऐसी बातें मिलेंगी जो आमतौर पर प्रसिद्ध हैं, जैसे मन फिराव, अंगीकार, बपतिस्मा और प्रेम।

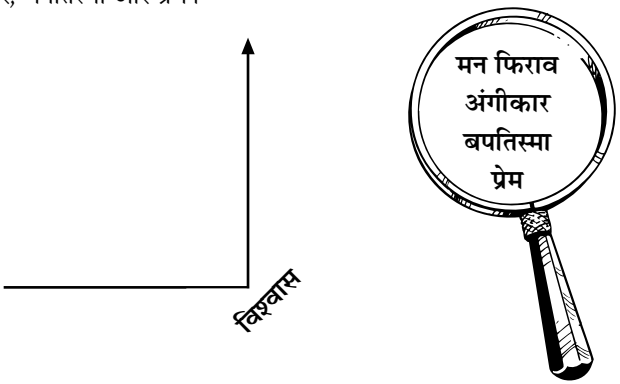

प्रभाव देने के लिए वह रुक गए और यह जोड़ते हुए कि ''पर कभी न भूलें कि यह पहले और सबसे पहले विश्वास'' ही है ''faith'' शब्द को टैप करने लगे। इस बात का पूरा महत्व हमारे अध्ययन में आगे स्पष्ट होगा।

दूसरा, हमें यह समझना होगा कि उद्धार दिलाने वाले विश्वास का फोकस उस पर नहीं है जिसे विश्वास है, न ही यह उस गवाही पर है जिससे यह विश्वास हुआ, बल्कि यह फोकस यीशु पर है। विश्वास ''इस संदेश पर आधारित है, पर संदेश में विश्वास के रूप में व्यक्ति में विश्वास ही है जिस पर संदेश ध्यान देता है।''[22] लैरी डीयसन ने इसे इस प्रकार कहा है: विश्वास की बात ''अन्ततः उपसर्ग नहीं, बल्कि व्यक्ति है।''[23] हम एक और संदर्भ में और विस्तार पर इस पर चर्चा करेंगे पर यह आवश्यक है कि आपको रोमियों का अध्ययन जारी रखते हुए इसकी समझ हो।

अंग्रेज़ी शब्द ''faith'' की चर्चा छोड़ने से पहले, ध्यान दें कि *pistis* (और इससे जुड़ा शब्द *pistos*) विश्वास योग्य हो सकता है। रोमियों 3:3 में इसका इस्तेमाल इस अर्थ में दिया गया है जो यह ध्यान दिलाता है कि मनुष्यों का अविश्वास ''परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को नकार'' नहीं सकता।[24] यह हमें अजीब लग सकता है क्योंकि हम आमतौर पर ''विश्वासी होने'' और ''विश्वास योग्य होना'' को दो अलग-अलग (चाहे मेल खाती) धारणाएं मानते हैं। फिर से अंग्रेजी शब्द ''faithful'' को देखें। यह ''विश्वास से भरे होने'' का सुझाव देता है।

मैं यह भी ध्यान दिलाना चाहता हूं कि *pistis* का अर्थ कई बार यीशु मसीह में विश्वास में केन्द्रित शिक्षा के ढांचे के लिए भी होता है।[25] ऐसा होने पर *pistis* से पहले एक निश्चित उप-पद (अंग्रेज़ी में ''the'' आम तौर पर मिलता है)। इस कारण प्रेरितों के काम में हम ''याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को मानने वाला हो गया'' (6:7) और पौलुस के चेलों को ''विश्वास में बने रहने'' के लिए प्रोत्साहन के बारे में पढ़ते हैं (14:22)। रोमियों में हमें *pistis* के इस इस्तेमाल का

कोई स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता, पर आपको सावधान रहना चाहिए कि यह एक सम्भावना है।

वचन की समीक्षा करना

आगे देखते हैं कि 16 और 17 आयतों में अंग्रेज़ी के ''believes'' और ''faith'' का इस्तेमाल कैसे किया गया है। आयत 16 के मध्य में कहा गया है कि सुसमाचार ''हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' यह उनके लिए, जो मूसा की व्यवस्था को मानते हैं, अच्छा जीवन बिताते हैं या अच्छे कर्म करते हैं उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ नहीं है। यह उनके लिए जो *विश्वास करते* हैं, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ हैं।

आयत 17 में पौलुस ने विश्वास करने (विश्वास होने) के महत्व पर अपने विचारों को विस्तार दिया। आयत का आरम्भ होता है, ''क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है।'' अनुवादित शब्द ''धार्मिकता'' के ''परमेश्वर के साथ सही खड़े होना'' और सही जीवन के कई अर्थ हो सकते हैं। परन्तु अभी के लिए मैं ''विश्वास से और विश्वास के लिए'' पर ही ध्यान देना चाहता हूं।

यूनानी धर्मशास्त्र में विश्वास से [*ek*] में विश्वास में [*eis*] है। इस वाक्यांश पर टिप्पणियों से कई कागज़ काले किए जा चुके हैं, पर कई विभिन्नताओं को दर्शाने के लिए लगता है कि थोड़ा सा संकेत मिला है। पौलुस के मुख्य विचार बिल्कुल स्पष्ट लगते हैं। हमारा उद्धार विश्वास के आधार पर होता है। फिर तो ''परमेश्वर के साथ सही'' होने को विश्वास ''से'' [के परिणाम स्वरूप] होना कहा जा सकता है। इसके साथ ही पौलुस अपने पाठकों को नहीं चाहता था कि वह यह सोचे कि मसीही बनने के बाद विश्वास की कोई आवश्यकता नहीं रही। उद्धार दिलाने वाला विश्वास व्यक्ति को ''विश्वास में'' लाने वाला यानी उस जीवन शैली में लाने वाला होना चाहिए जो विश्वास पर आधारित हो और विश्वास के परिणाम स्वरूप हो (देखें 2 कुरिन्थियों 5:7)। NIV में इस विचार को इस प्रकार व्यक्त किया गया है: ''धार्मिकता जो विश्वास के द्वारा *आरम्भ से अन्त तक* है।''

अपने विचार को और बल देने के लिए पौलुस ने पुराने नियम की एक आयत दी: ''जैसा लिखा है, कि 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।' '' (रोमियों 1:17)। यह उद्धरण हबक्कूक 2:4 से लिया गया है। पुन: पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए उद्धरण की विद्वानों की अलग-अलग व्याख्या हैं। क्या इन शब्दों का अर्थ यह है कि विश्वासी जिसे (आत्मिक) जीवन मिलना है या उनका अर्थ यह है कि मसीही व्यक्ति को विश्वास से जीवन जीना चाहिए? इस प्रश्न पर उलझन को RSV और NRSV द्वारा समझाया गया है। RSV के अनुवादकों ने आयत 17 के अन्तिम भाग को इस प्रकार व्यक्त किया है: ''वह जो विश्वास के द्वारा धर्मी है जीएगा।'' इस संस्करण को अपडेट करने वाले अनुवादकों ने इस प्रकार बदल दिया, ''जो धर्मी है, वह विश्वास से जीएगा।''

''विश्वास से जीवित रहेगा'' शब्दों को आमतौर पर हम जिस प्रकार इस्तेमाल करते हैं, वह उस विचार का समर्थन करता है, जो विश्वास पर आधारित जीवन शैली जीने के बारे में पौलुस के मन में था। परन्तु हबक्कूक और रोमियों में सामान्यतया दोनों ही इस स्थिति के पक्षधर हैं कि पौलुस इस विचार पर बल दे रहा था कि जो विश्वास करता है वह जीवन पाएगा, यानी आत्मिक और अनन्त जीवन (देखें रोमियों 6:23)।

हबक्कूक के इस वचन को देखें, ''देख, उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा'' (2:4)। हबक्कूक की पुस्तक का विषय कसदियों (बेबिलोनियों) का विनाश है। परमेश्वर ने हबक्कूक को बताया कि वह यहूदा को दण्ड देने के लिए कसदियों को खड़ा करेगा। हबक्कूक हैरा नथा कि ऐसा क्यों हुआ जबकि कसदी तो इस्राएलियों से अधिक दुष्ट थे। परमेश्वर ने हबक्कूक को आश्वस्त किया कि वह कसदियों को नष्ट कर देगा और इस नबी को बताया कि, ''इसकी चिंता मत कर। मुझ पर भरोसा रख!'' संदर्भ में 2:4 के अन्तिम भाग का अर्थ है कि ''धर्मी व्यक्ति मुझ पर तब भी भरोसा रखेगा, जब लगेगा कि बुरा हो रहा है'' (कसदियों के बारे में), और मैं उसे सुरक्षित रखकर प्रतिफल दूंगा। डब्ल्यू. जे. डीन ने 2:4 को इस प्रकार लिखा है: ''जब घमण्डी, लालची राज्य विनाश में डूब जाएगा, तब विश्वास योग्य लोग सुरक्षित रहेंगे।''[26] पौलुस बेशक इस आयत के मूल ज़ोर दिए जाने से अवगत था, उसने ''इसे गहरे महत्व में भी देखा।''[27] विश्वास में हबक्कूक के समय में भौतिक जीवन सुनिश्चित किया था और पौलुस के समय में इसने आत्मिक जीवन देना था।

''विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'' के दो सम्भावित अर्थों को देखने के बाद क्या यह आवश्यक है कि हम दूसरे को निकालने के लिए एक अर्थ पर केन्द्रित हों? पौलुस ने अभी अभी कहा था कि मसीही जीवन का आरम्भ विश्वास से होता है और विश्वास से जारी रहता है, इसलिए शायद वह इस उद्धरण के दोनों विचारों को मिलाना चाहता था। हमारे जानने के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि ''धार्मिकता देने के लिए परमेश्वर की योजना [हमारे] विश्वास से आरम्भ और जारी रहने वाली प्रक्रिया'' है (रोमियों 1:17; फिलिप्स); ''... आरम्भ से अन्त तक यह भरोसा ही है'' (आयत 17ख; CJB)।

हमारे लिए यह समझने की आवश्यकता क्यों है कि ''आरम्भ से अन्त तक'' हमारा उद्धार विश्वास पर आधारित है न कि व्यवस्था या कर्मों या किसी और बात पर, पर केवल विश्वास पर? अध्याय 4 में पहुंचकर हम बाइबल के इस आश्चर्य, आशीष और आन्नद को देखेंगे!

अत्यावश्यक परिणाम: धार्मिकता (1:17)

अब हम ''धार्मिकता'' और ''धर्मी'' शब्दों पर आते हैं ''क्योंकि उस [सुसमाचार] में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'' (आयत 17)। यहां पहली बार हमें ''धार्मिकता'' और ''धर्मी'' शब्द मिलते हैं। पौलुस ने ''धार्मिकता'' और इससे जुड़ते शब्दों का इस्तेमाल इस पत्र में सत्तर बार किया है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें यह समझ हो कि इस शब्द के अर्थ क्या हैं।

शब्दों की व्याख्या करना

रोमियों में हमें इस परिवार में शब्दों का परेशान करने वाला प्रबन्ध मिलता है। सम्बन्धित संज्ञा रूप (*dikaioma*) के साथ अधिकतर (*dikaiosune*) शब्द मिलता है; जिनमें दोनों का अर्थ ''धार्मिकता'' है। एक क्रिया रूप (*dikaioo*) है जिसका अर्थ ''धर्मी घोषित करना'' हो सकता है। फिर एक रूप है, जिसे हम विशेषण या क्रिया विशेषण कह सकते हैं (*dikaios*) जिसका अर्थ

''धर्मी'' या ''धर्म से'' है। अन्य रूपों में एक नकारात्मक (*adikia*) है जिसका अर्थ है ''अधार्मिकता।''

उलझन को सुलझाने के लिए इन यूनानी शब्दों का अनुवाद आमतौर पर ''just,'' ''justify,'' ''justly'' या ''justice'' किया जाता है। ए. डब्ल्यू. टॉज़र ने ध्यान दिया कि ''मूल भाषा का वही शब्द अंग्रेज़ी में 'justice' 'righteousness' हो जाता है जिसे कोई अनुवादक की सोच पर ही संदेह करेगा।''[28] यदि आप KJV बाइबल का इस्तेमाल करते हैं तो आपने 1:17 में यह देखा होगा कि ''the *righteousness* of God revealed from faith to faith'' कहने के बाद यह कहता है, ''As it is written, The *just* shall live by faith.'' NASB में एक उदाहरण के लिए, देखें रोमियों 3. अध्याय में 6 बार ''righteous'' एक बार ''unrighteous'' एक बार ''just,'' एक बार ''justify,'' चार बार ''justified'' और एक बार ''justifier'' है। ये सभी शब्द एक ही मूल यूनानी शब्द से निकले हैं।

इस शब्द परिवार के अर्थों को समझने के लिए, आइए ''righteousness'' शब्द पर ध्यान लगाते हैं। यह अंग्रेज़ी शब्द एंग्लोशेक्सन शब्द से लिया गया है, जिसे लिप्यंरित करने पर ''rightwiseness,'' पढ़ा जाएगा।[29] यदि किसी नाव को उलट कर पलटा दिया जाए, तो हम कह सकते हैं कि इसे ''right-wised'' अर्थात ऊपर को सीधा मोड़ने की आवश्यकता है।

धार्मिकता के लिए ''righteousness'' के लिए यूनानी शब्दों और उससे जुड़े शब्दों पर ध्यान दें, और आप पाएंगे कि उन सब का एक ही मूल है; उनका आरम्भ उन्हीं अक्षरों से होता है। उन्हें *dike* से लिया गया है, जिसका एक अर्थ ''right'' है।[30] ''Being right'' या ''rightness'' पर विचार करें। ''Right'' शब्द को ''righteousness'' की चर्चा में आगे दिखाया गया है।

धार्मिकता के लिए ''righteousness'' शब्द का इस्तेमाल कई बार परमेश्वर के स्वभाव को बताने के लिए किया जाता है (रोमियों 3:25, 26 में ''उसकी धार्मिकता'' देखें)। परमेश्वर पर लागू करने पर ''धार्मिकता'' शब्द का अर्थ सही व्यक्ति होता है। यह बिल्कुल सही है। परमेश्वर हर बात में जो वह है और जो करता है पूर्णतया और सम्पूर्ण तौर पर सही है। परमेश्वर की धार्मिकता उसकी पवित्रता की अभिव्यक्ति है। पवित्र होने के कारण वह पाप के प्रति उदासीन या इसे हल्के से नहीं ले सकता।[31] उसका धर्मी स्वभाव मांग करता है कि पाप को दण्ड दिया जाए। (इस पर चर्चा हम अध्याय 3 में पहुंचकर करेंगे।)

''धार्मिकता'' शब्द को दोनों में से किसी अर्थ में भी मनुष्यों के लिए भी लागू किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल सही जीवन के अर्थ में किया जा सकता है। 1 यूहन्ना 2:29 और 3:7, 10 व्यवहारिक धार्मिकता की बात करते हैं जबकि प्रकाशितवाक्य 19:8 ''पवित्र लोगों को धर्म के काम'' की बात करता है। फिर तो एक अर्थ में सही जीवन जीने की कोशिश करने वालों को ''धर्मी'' कहा जा सकता है।[32] क्योंकि सिद्धता से जीवित कोई नहीं रह सकता इसलिए ''धार्मिकता'' एक प्रासंगिक सही होना है। पूरी कोशिश करने के बावजूद भी जब हम पाप करते और परमेश्वर की महिमा से गिर जाते हैं (रोमियों 3:23)। इस कारण पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि ''कोई धर्मी नहीं [पूर्ण अर्थ में] एक भी नहीं'' (आयत 10)।

परमेश्वर का ''सही होना'' और मनुष्य का ''सही न होना'' रोमियों के मूल संदेश का तनाव देता है। इस तनाव को रोमियों 3:26 के शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है कि परमेश्वर धर्मी

''just'' (सही) होने के साथ-साथ उनका जो सही नहीं हैं (उनके साथ ऐसे व्यवहार करके जैसे वे सही हों) ''धर्मी ठहराने वाला'' कैसे हो सकता है? इस समस्या का समाधान मनुष्यों पर ''धार्मिकता'' शब्द के दूसरे ढंग से लागू करने पर मिलता है। रोमियों में ''धार्मिकता'' शब्द का यह सबसे महत्वपूर्ण इस्तेमाल है। इस अर्थ में इस्तेमाल करने पर इस शब्द का अर्थ प्रभु के साथ सही खड़े होना होता है। मेरा मानना है कि 1:17 में इसी अवधारणा को व्यक्त किया गया है।

अध्ययन जारी रखते हुए हम देखेंगे कि पौलुस इस अद्‌भुत सच्चाई की घोषणा करता है कि व्यक्ति चाहे सही नहीं है पर परमेश्वर उसे विश्वास कर लेने पर सही मानता है। 4:3 को देखें: ''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।'' जब अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, तो चाहे वह वास्तव में धर्मी नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने उससे ऐसे व्यवहार किया जैसे वह धर्मी हो। NASB में ''credited'' या ''credits'' किया गया है (आयतें 4-6, 9, 10, 22-24), जबकि KJV में ''counted'' (आयतें 3, 5), ''reckoned'' (आयतें 9, 10), और ''imputed'' (आयतें 6, 22-24) इस्तेमाल किया गया है। हम इस ''righteousness'' या धार्मिकता को थोपी गई धार्मिकता कह सकते हैं।

इन विचारों को हम आगे और विस्तार से देखेंगे। अभी के लिए केवल ''धार्मिकता'' के शब्द के तीन इस्तेमालों को ध्यान में रखें, जिनकी हमने चर्चा की है।

परमेश्वर पर लागू करने पर:
सही व्यक्ति, बिल्कुल सही होना।
मनुष्यों पर लागू करने पर:
सही जीवन, तुलनात्मक सही होना।
सही खड़े होना (प्रभु के साथ),
थोपा गया सही होना।

वचन की समीक्षा करना

इस भाग को समाप्त करने से पहले 1:17 में ''धार्मिकता'' के इस्तेमाल को देख लेते हैं: ''क्योंकि उस [सुसमाचार] में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।' '' मेरा मानना है कि इस आयत में ''धार्मिकता'' शब्द लोगों को ऐसे मानने के लिए परमेश्वर का प्रबन्ध है *जैसे* वे धर्मी हों। इस ''धार्मिकता'' को ''परमेश्वर की धार्मिकता'' कहा जाता है क्योंकि यह उसकी ओर से है। वचन इस बात पर ज़ोर देता है कि यह सुसमाचार में ''प्रकट होती है'' यानी इस धार्मिकता को जानने का हमारे पास एक मार्ग सुसमाचार के प्रचार के द्वारा है।

अगले पाठों में हम चर्चा करेंगे कि यीशु का बलिदान परमेश्वर के लिए मसीह में विश्वास करने और अपने जीवन उसे देने पर पापियों को धर्मी गिनना ठीक-ठीक सम्भव *कैसे* बनाता है। अभी के लिए हम इस सच्चाई में आनन्दित होते हैं कि परमेश्वर हमें धर्मी गिनता है। यदि आपका विवेक स्वस्थ हो, तो आप अपनी कमियों से अवश्य अवगत होंगे, चाहे आप कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें। क्या यह जानना अद्‌भुत नहीं है कि आपकी अधार्मिकता के बावजूद परमेश्वर आपके साथ अपने पुत्र के कारण धर्मी की तरह व्यवहार करेगा। इस अद्‌भुत सच्चाई के लिए

परमेश्वर को धन्यवाद दें।

सारांश

रोमियों 1:16, 17 को ''मसीहियत के अब तक के सबसे गम्भीर और संक्षिप्त कथनों में एक कहा गया है।''[33] इतिहास बताता है कि मार्टिन लूथर पर इन आयतों का इतना गहरा प्रभाव था कि उसने मसीहियत को देखने के उसके दृष्टिकोण को बदल दिया।[34] इस कारण इन्हें सुधारवादी लहर के आरम्भ में मुख्य बल होने का श्रेय दिया जा सकता है। इन्हें ध्यान से पढ़ें और उन अद्भुत सच्चाइयों पर विचार करें जिनका यह परिचय देती हैं। यह आपके जीवन को भी बदल सकती हैं!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का एक वैकल्पिक शीर्षक काम में लग जाना हो सकता है। यदि आप शब्द अध्ययन के बिना रोमियों 1:16, 17 का आयत दर आयत अध्ययन करना पसन्द करते हों, तो वारेन डब्ल्यू वियर्सबे की इस रूपरेखा का इस्तेमाल किया जा सकता है: (1) सुसमाचार का मूल: यह मसीह का सुसमाचार है (आयत 16क); (2) सुसमाचार का कार्य: यह परमेश्वर की सामर्थ है (आयत 16ख); (3) सुसमाचार का परिणाम: यह उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (आयत 16ग); (4) सुसमाचार की पहुंच: यह विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के लिए है (आयतें 16घ, 17)।[35] आप रोमियों 1:14-16 के तीन ''मैं हूं'' पर अतिरिक्त प्रवचन भी दे सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 39. [2]*यह उदाहरण इलस्ट्रेटिंग पाल'स लैटरस टू द रोमन्स,* संक. जेम्स एफ. हाईटॉवर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस., 1984), 12 में विलियम पी. टक से लिया गया। [3]ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 23. [4]क्रिस बुलर्ड, ''रोमन्स: हाउ गॉड एक्सेप्ट्स पीपुल लाइक अस'' (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं), कैसेट। [5]इसका अर्थ यह नहीं है कि सुसमाचार ''उद्धार के निमित्त,'' कई सामर्थों में से एक है या हमें ''सामर्थ'' के सामने ''निश्चित उपपद'' लगाना चाहिए (''a'') ''power.'' [6]वालनट ग्रोव चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, सवन्नाह, टेनसी, 13 अगस्त, 2000 को दिए गए कॉय रोपर के सरमन ''दि गॉस्पल'' में। [7]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रेडरिक, ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 269-70 में गरहर्ड फ्रेडरिक, ''*euangelizomai*''। [8]रॉबर्ट एच. माउंस, ''गॉस्पल'' *इवेंजलिकल डिक्शनरी ऑफ़ थियोलॉजी,* संपा. वाल्टर ए.एलवेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1984), 472. [9]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 27. [10]जेम्स मीडोस, क्लास नोट्स, *रोमन्स,* ईस्ट टेनिसी स्कूल ऑफ प्रीचिंग एण्ड मिशन, नॉक्सविल्ल (2003), 5.

[11]*इलस्ट्रेटिंग पॉल'स लैटर्स टू द रोमन्स,* संक. जेम्स. एफ. हाईटॉवर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1984), 12 में ब्रेन हार्बर से लिया गया। [12]रोपर। [13]वही। [14]लैरी डीयसन, *''दि राइटियसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ़*

रोमन्स, संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 16 के अनुसार रोमियों में ये शब्द कुल इकसठ बार मिलते हैं। [15]वाइन 61 में *peitho* को *pisteuo* के साथ दिया गया है। *दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन* में *pistis* के साथ pisteuo को उपशीर्षक में दिया गया है (लंदन: समुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, लि., 1971), 314. [16]वाइन, 222. [17]इसी शब्दावली का इस्तेमाल न करने के बावजूद विश्वास न दिलाने वाले तीहरे स्वभाव को समझते हैं (उदाहरण के लिए, वाइन, 222; चार्ल्स आर. स्विन्डल, *कमिंग टू टर्मस विद सिन: ए स्टडी ऑफ रोमन्स 1-5* [अनाहेम, क्लिफटन: इनसाइट फॉर लिविंग, 1999], 13)। [18]वाइन, 61. [19]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड एण्ड गरहर्ड फ्रेडरिक ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 854-55 में रुडॉल्फ बल्टमैन, *''pisteuo.''* [20]वाइन, 222.

[21]बाल्टमैन, 854. [22]वही। [23]लैरी डीयसन, *''दि राइटियसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (क्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 16. [24]वाइन, 61. [25]वही, 222. [26]डब्ल्यू. जे. डीन, ''हबक्कूक,'' *पुलपिट कमैंट्री,* अंक, 14, संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एण्ड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 23. [27]एंडर नाइग्रन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (फिलाडेल्फिया: फोर्टलेस प्रैस, 1949), 88. [28]ए. डब्ल्यू. टोज़र, *दि नॉलेज ऑफ़ द होली,* 92; जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आरकैंसा: जिम्मी ऐलन, 1973), 30 में उद्धृत। [29]वाइन, 535. [30]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन,* 102.

[31]वाइन, 535. [32]यह वाक्य परमेश्वर के साथ सही खड़े होने वाले के लिए है। बाइबल किसी अविश्वासी को कभी ''धर्मी'' नहीं कहेगी, चाहे उसका नैतिक मापदण्ड कितना भी ऊंचा क्यों न हो। [33]बार्टन, वीरमैन एण्ड विलसन, 12. [34]कई लेखक इस कहानी को बताते हैं। एक स्रोत एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर टू पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: *विलियम बी.*) है। [35]वोरन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक. 1 (व्हीटन, इलिनोइ: विक्टर बुक्स, 1989), 516-17.